पुणे विश्वविद्यालय
एम.ए. हिंदी पाठ्यक्रम
सत्र (सेमिस्टर) पध्दति

(शैक्षणिक वर्ष : 2008–2009,2009–2010,2010–2011 तथा 2011–12)

प्रस्तुत पाठ्यक्रम की रचना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली की ''मॉडेल पाठ्यचर्या'' के आलोक में की गई है।

- एम.ए. हिंदी तृतीय सत्र और चतुर्थ सत्र के इस पाठ्यक्रम का अध्ययन व अध्यापन एक साथ जून, 2009 से आरंभ होकर मई–जून 2012 तक की परीक्षा के लिए होगा।
- संपूर्ण पाठ्यक्रम का विभाजन चार सत्रों (दो वर्ष) के लिए होगा। विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्क्रम में से प्रथम सत्र के लिए प्रश्नपत्र 1 से 4 तक का और व्दितीय सत्र के लिए प्रश्नपत्र 5 से 8 तक तृतीय सत्र के लिए प्रश्नपत्र 9 से 12 तक और चतुर्थ सत्र के लिए प्रश्नपत्र 13 से 16 तक का अध्ययन करना होगा।
- 'संपूर्ण हिंदी' विषय लेने वाले विद्यार्थियों के लिए सामान्य स्तर और विशेष स्तर के प्रश्नपत्रों का अध्ययन करना होगा। गौण विषय के रूप में हिंदी का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को प्रथम सत्र में प्रश्नपत्र 1 (सामान्य स्तर) और व्दितीय सत्र में प्रश्नपत्र 5 (सामान्य स्तर) का अध्ययन करना होगा। तृतीय सत्र में प्रश्नपत्र 9 और चतुर्थ सत्र में 13 का अध्ययन करना होगा।
- प्रश्नपत्र 2,3,4,6,7,8,10,11,12,14,15,16 विशेष स्तर के रहेंगे। इनमें से प्रश्नपत्र 4 और प्रश्नपत्र 8 के अंतर्गत 4–4 विकल्प रखे गए हैं। प्रश्नपत्र 12 और प्रश्नपत्र 16 के अन्तर्गत 3–3 विकल्प रखे गए हैं। विद्यार्थियों को इनमें से प्रतिसत्र किसी एक ही वैकल्पिक प्रश्नपत्र का चयन करना होगा।
- किसी विशेष विषय में विशेषता प्राप्त करने के लिए प्रश्नपत्र 4 और प्रश्नपत्र 8 के अंतर्गत प्रतिसत्र के लिए 4–4 विकल्प रखे गए हैं। प्रश्नपत्र 12 और प्रश्नपत्र 16 के अन्तर्गत 3–3 विकल्प रखे गए हैं। विद्यार्थी अपने अध्ययन केंद्र में पढ़ाए जानेवाले विकल्पों में से किसी एक ही विकल्प का अध्ययन कर सकता है।

महत्वपूर्ण सूचनाएँ

1. प्रथम तथा तृतीय सत्र के अन्त में 20 अंकों की अन्तर्गत परीक्षा (टेस्ट+सेमीनार) होगी।
2. व्दितीय सत्र के अन्त में प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए 20 अंकों की मौखिकी परीक्षा होगी।
3. चतुर्थ सत्र के अन्त में प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए पाठ्यक्रम से संबंधित परियोजना (Long paper) देनी होगी
4. परियोजना (Long paper) के निकष :–
   - विषय से संबंधित हो
   - अनुसंधानात्मक हो
   - लिखित/टंकित रूप में हो (पृष्ठसंख्या 10–15)
   - शोध सामग्री एवं संदर्भ ग्रंथ सूची संलग्न हो
   - संबंधित विभागव्दारा मूल्यांकन होगा

   अंकविभाजन – 1. विषय का वस्तुनिष्ठ विवेचन – 5
   2. तर्कनिष्ठ भाषा, सन्दर्भ प्रमाणों का प्रयोग – 5
   3. अनुसंधानात्मक निष्कर्षों की स्थापना – 5
   4. कुल प्रभाव – 5
5. पुराने पाठ्क्रम के अनुसार जिन छात्रों का एम.ए. हिंदी का एक भाग (भाग 1 अथवा भाग 2) पूरा हो चुका है वे दूसरा भाग (भाग 1 अथवा भाग 2) भी पुराने पाठ्यक्रम के अनुसार ही पूरा करेंगे।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- छात्रों में साहित्य को समझने, उसका आस्वादन करने तथा मूल्यांकन करने की दृष्टि बढ़ाना।
- हिंदी साहित्य की प्राचीन व आधुनिक गद्य, पद्य विधाओं का तात्विक परिचय कराना।
- साहित्यिक प्रवृतियों के संदर्भ में विभिन्न साहित्य विधाओं के विकासक्रम का परिचय देना।
- साहित्य कृतियों का विविध दृष्टियों से विवेचन–विश्लेषण, आस्वादन तथा समीक्षा करने की दृष्टि देना।
- साहित्यकारों के साहित्यिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय कराना तथा साहित्य के लिए उनके योगदान पर प्रकाश डालना।
- प्राचीन एवं आधुनिक भारतीय एवं पाश्चात्य समीक्षा सिध्दांतों और आलोचना प्रणालियों का अध्ययन कराना।
- भाषाविज्ञान, अनुवादविज्ञान, शैलीविज्ञान, सौंदर्यशास्त्र, लोकसाहित्य, दलित साहित्य, प्रयोजनमूलक हिंदी, जनसंचार माध्यम और हिंदी,

भारतीय साहित्य, पत्रकारिता प्रशिक्षण आदि विषयों के अध्ययन के लिए छात्रों को प्रोत्साहन देना।

- हिंदी भाषा की व्यावहारिक उपयोगिता का परिचय देना।
- छात्रों की साहित्य संबंधी अभिरूचि तथा आस्वादन क्षमता में अभिवृध्दि करना।
- छात्रों को जनसंचार एवं इलैक्ट्रानिक मीडिया में हिंदी की उपादेयता तथा सूचना प्रौद्योगिकी के नए क्षेत्र में हिंदी की विकास यात्रा की जानकारी देकर उनमें अभिरूचि निर्माण करना।

पुणे विश्वविद्यालय
एम.ए. हिंदी पाठ्यक्रम
सत्र (सेमिस्टर) पध्दति

एम.ए.(हिंदी)- प्रथम सत्र (शैक्षिक वर्ष :- 2008-09,2009-10,2010-11)

प्रश्नपत्र	विषय	कोड न.	
प्रश्नपत्र १	सामान्य स्तर : **आधुनिक हिंदी कथा साहित्य** (उपन्यास तथा कहानी)	10531	
प्रश्नपत्र २	विशेष स्तर : **प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्य** (विद्यापति तथा जायसी)	10532	
प्रश्नपत्र ३	विशेष स्तर : **भारतीय काव्यशास्त्र के सिध्दांत**	10533	
प्रश्नपत्र ४	विशेष स्तर : **वैकल्पिक विशेष साहित्यकार** अ) कबीर	10534	
	आ) तुलसीदास	10535	
	इ) नाटककार मोहन राकेश	10536	
	ई) कवि अज्ञेय	10537	

एम.ए. (हिंदी)- द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र 5	सामान्य स्तर : **आधुनिक हिंदी नाटक तथा अन्य विधाऍं** (नाटक,निबंध तथा यात्रा साहित्य)	20531	
प्रश्नपत्र 6	विशेष स्तर : **मध्ययुगीन हिंदी काव्य** (सूरदास,बिहारी तथा घनानंद)	20532	
प्रश्नपत्र 7	विशेष स्तर : **पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांत** तथा आलोचना	20533	
प्रश्नपत्र 8	विशेष स्तरः **वैकल्पिकः विशेष विधा तथा अन्य** क) हिंदी उपन्यास	20534	
	ख) हिंदी नाटक और रंगमंच	20535	
	ग) प्रयोजनमूलक हिंदी	20536	

	घ) दलित साहित्य	20537	

एम.ए. (हिंदी)- तृतीय सत्र (शैक्षिक वर्ष :- 2009-10,2010-11,2011-12)

प्रश्नपत्र 9	सामान्य स्तर : **आधुनिक काव्य I** (महाकाव्य दीर्घ कविता तथा काव्यनाटक)	30531	
प्रश्नपत्र 10	विशेष स्तर : **भाषा विज्ञान**	30532	
प्रश्नपत्र 11	विशेष स्तर : **हिंदी साहित्य का इतिहास** (आदिकाल,भक्तिकाल,रीतिकाल तक)	30533	
प्रश्नपत्र 12	विशेष स्तरः **वैकल्पिकः I** अ)आधुनिक हिंदी आलोचना	30534	
	आ) अनुवाद विज्ञान	30535	
	इ) जनसंचार माध्यम और हिंदी	30536	

एम.ए. (हिंदी)- चतुर्थ सत्र

प्रश्नपत्र 13	सामान्य स्तर : **आधुनिक काव्य II** (खण्डकाव्य, विशेष कवि तथा नई कविता)	40531	
प्रश्नपत्र 14	विशेष स्तर : **हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकास**	40532	
प्रश्नपत्र 15	विशेष स्तर : **हिंदी साहित्य का इतिहास** (आधुनिक काल)	40533	
प्रश्नपत्र 16	विशेष स्तर : **वैकल्पिक : II** क) भारतीय साहित्य	40534	
	ख) लोकसाहित्य	40535	
	ग) हिंदी पत्रकारिता	40536	

एम.ए.(हिंदी) तृतीय सत्र

प्रश्न पत्र 9 : सामान्य स्तर – आधुनिक काव्य I

(महाकाव्य, दीर्घ कविता तथा काव्यनाटक)

उद्‌देश्य

1. छात्रों को आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय कराना।
2. छात्रों को आधुनिक काल के प्रबंध और मुक्तक काव्य के तात्विक स्वरूप की जानकारी देना। आधुनिक युग में इन काव्य प्रकारों के विकासक्रम का परिचय देना।
   छात्रों को आधुनिक काव्य प्रकारों के तात्विक स्वरूप एवं विकासक्रम के परिप्रेक्ष्य में रचनाओं के आस्वादन,अध्ययन और मूल्यांकन की दृष्टि देना।

अध्यापन पद्‌धति

व्याख्यान तथा विश्लेषण।
संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
दृक्–श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग
परिचर्चा।
अतिथि विद्‌वानों के व्याख्यान।

–: पाठ्‌यक्रम :–

(1)कामायनी : जयशंकर प्रसाद

प्रकाशक : प्रसाद प्रकाशन गोवर्धन सराय, वाराणसी
केवल 'चिंता', 'श्रद्‌धा' तथा आनंद' सर्गों का अध्ययन

अध्ययनार्थ विषय :

'कामायनी' की कथा में इतिहास और कल्पना
'कामायनी' में चरित्र चित्रण
'कामायनी' में रूपक तत्व
'कामायनी' का महाकाव्यत्व
'कामायनी' की दार्शनिकता
'कामायनी' का कला पक्ष–भाषा, अलंकार ,छंद विधान

(2)दीर्घ कविताएँ : संपा.डॉ सुरेशकुमार जैन/डॉ.नीला बोर्वणकर

प्रकाशक : विद्यानिधि,59/71, काबुल नगर
शाहदरा, दिल्ली 110032

केवल निम्नलिखित कविताएँ

1. सरोजस्मृति
2. असाध्यवीणा
3. ब्रह्मराक्षस
4. पटकथा : धूमिल

अध्ययनार्थ विषय:

सरोजस्मृति : 1. निराला के काव्य की विशेषताएँ
2. निराला के काव्य का कथ्य तथा शिल्प
3. अज्ञेय के काव्य की विशेषताएँ
4. अज्ञेय के काव्य का कथ्य तथा शिल्प
5. मुक्तिबोध के काव्य की विशेषताएँ
6. मुक्तिबोध के काव्य का कथ्य तथा शिल्प
7. धूमिल के काव्य की विशेषताएँ
8. धूमिल के काव्य का कथ्य तथा शिल्प

(3)अंधायुग : डॉ धर्मवीर भारती
प्रकाशक : किताब महल , इलाहाबाद

1. 'अंधा युग' की कथावस्तु
2. 'अंधा युग' में चरित्रांकन
3. 'अंधा युग' में संवाद – योजना
4. 'अंधा युग' का उद्‌देश्य – पौराणिकता एवं आधुनिकता
5. 'अंधा युग' में रंगमंचीयता
6. 'अंधा युग' का शिल्प और कला पक्ष – भाषा, बिंब विधान, प्रतीक योजना।

संदर्भ ग्रंथ

1. कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन – डॉ द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
2. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ – डॉ नगेन्द्र
3. कामायनी चिंतन – विमलकुमार जैन
4. कामायनी : एक नवीन दृष्टि – प्रो. रमेशचंद्र गुप्त
5. कामायनी : इतिहास और रुपक –सुशीला भारती
6. कामायनी विमर्श– भगीरथ दीक्षित
7. कामायनी कला और दर्शन – राममूर्ति त्रिपाठी
8. कामायनी एक पुनर्विचार – गजानन माधव मुक्तिबोध
9. कामायनी पुनर्मूल्यांकन – डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी
10. धर्मवीर भारती और उनका अंधा युग – साधना भंडारी
11. धर्मवीर भारती : अनुभव और अभिव्यक्ति –लक्ष्मणदत्त गौतम
12. अंधा युग : एक सृजनात्मक उपलब्धि – डॉ. सुरेश गौतम
13. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में महाभारत के पात्र – डॉ. जे.आर बोरसे
14. हिंदी गीतिनाट्य और समीक्षा – डॉ. शिवशंकर कटारे
15. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर – डॉ. संतोषकुमार तिवारी
16. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
17. मुक्तिबोध की काव्य भाषा – डॉ. सनत कुमार, चिंतन प्रकाशन, कानपुर
18. मुक्तिबोध – संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
19. मुक्तिबोध की कविताएँ : बिंब प्रतिबिंब – नंदकिशोर नवल
20. लक्षित मुक्तिबोध – मोतिराम वर्मा
21. मुक्तिबोध के प्रतीक और बिंब – चंचल चौहान
22. मुक्तिबोध ज्ञान और संवेदना – नंदकिशोर नवल
23. धूमिल की काव्य यात्रा – मंजू अग्रवाल
24. धूमिल और उसका काव्य संघर्ष – डॉ. ब्रम्हदेव मिश्र

25. दूसरे प्रजातंत्र की तलाश में धूमिल – कुमार कृष्ण
26. समकालीन बोध और धूमिल का काव्य – डॉ. हुकुमचंद्र राजपाल
27. समकालीन कवि और धूमिल – डॉ. मंजूल उपाध्याय
28. नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर – डॉ. संतोष कुमार तिवारी
29. नयी कविता की लंबी कविताएँ – डॉ. रामसुधार सिंह
30. लंबी कविताओं का रचना विधान – संपा नरेंद्र मोहन
31. धर्मवीर भारती की साहित्य साधना – संपा. पुष्पा भारती
32. धर्मवीर भारती : युग चेतना और अभिव्यक्ति – डॉ. सरिता शुक्ल
33. अंधा युग रचना धर्मिता के विविध आयाम – डॉ. माया मलिक
34. डॉ. धर्मवीर भारती का गद्य साहित्य – डॉ. साधना भंडारी
35. कवि कहानीकार अज्ञेय और मुक्तिबोध : संवेदना दृष्टि– डॉ भरतसिंह, वाणी प्रकाशन
36. मुक्तिबोध के प्रतीक और बिंब – चंचल चौहान
37. नई कविता – डॉ. देवराज
38. नई कविता की नाट्यमुखी भूमिका – डॉ. हुकुमचंद राजपाल
39. निराला के काव्य का राजनीतिक संदर्भ – डॉ. संध्या सिंह
40. निराला की साहित्य साधना – डॉ. रामविलास शर्मा
41. क्रांतिकारी कवि निराला – डॉ. बच्चन सिंह
42. निराला : आत्महन्ता आस्था – डॉ. दूधनाथ सिंह
43. विश्वकवि निराला – डॉ. बुध्दसेन नीहार
44. निराला की लंबी कविताएँ – विनोद कुमार जायस्वाल
45. नई कविता – निराला, अज्ञेय और मुक्तिबोध –विद्या सिंहा
46. अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या – डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी
47. अज्ञेय का काव्य – डॉ. सुमन झा
48. अज्ञेय : चेतना के सीमांत – डॉ. ज्वालाप्रसाद खेतान
49. अज्ञेय की काव्य तितीर्षा – नंदकिशोर आचार्य
50. कवियों के कवि अज्ञेय – डॉ. शंकर मुदगल

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

समय 3 घंटे (कुल अंक 80)

सूचना : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे।

ससन्दर्भ व्याख्या का प्रश्न अनिवार्य होगा।

प्रश्न 1. 'कामायनी' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न अथवा कामायनी' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न ।

प्रश्न 2. 'दीर्घ कविताओं' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न अथवा 'दीर्घ कविताओं पर दीर्घोत्तरी प्रश्न ।

प्रश्न 3. 'अंधायुग' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न अथवा 'अंधायुग' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न।

प्रश्न 4. टिप्पणियाँ (6 में से 4) प्रत्येक पाठ्यपुस्तक पर 2–2 टिप्पणियाँ

प्रश्न 5. ससंदर्भ व्याख्या (3 में से 2) **यह प्रश्न अनिवार्य होगा**

(क) 'कामायनी', अथवा 'कामायनी'।

(ख) 'दीर्घ कविताएँ', अथवा 'दीर्घ कविताएँ'।

(ग) 'अंधायुग', अथवा 'अंधायुग'।

एम.ए.(हिंदी) तृतीय सत्र
प्रश्न पत्र 10 : विशेष स्तर – भाषा विज्ञान

उद्देश्य :–

1. भाषा विज्ञान के अंगों एवं विभिन्न शाखाओं का परिचय देना।
2. भाषा विज्ञान के सैद्धांतिक पक्ष से अवगत कराना।
3. भारतीय आर्य भाषाओं के ऐतिहासिक विकास क्रम की जानकारी देना।
4. हिंदी के शब्द भंडार एवं व्याकरणिक स्वरूप से परिचित कराना।
5. हिंदी के शब्द–भेदों के विकास क्रम का विवरण देना।
6. हिंदी के विविध रूपों की जानकारी देना।
7. साहित्य के अध्ययन में भाषाविज्ञान की उपयोगिता स्पष्ट करना।
8. विकास के संदर्भ में देवनागरी लिपि की विशेष जानकारी देना।

अध्यापन पद्धति

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग।
4. भाषा प्रयोगशाला में प्रयोग।
5. परिचर्चा तथा अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषयः

1. भाषा की परिभाषा एवं स्वरूप, भाषा के अभिलक्षण, भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार, भाषा विज्ञान का स्वरूप एवं व्याप्ति।
2. भाषा विज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ –वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, और तुलनात्मक।
3. भाषा की शाखाएँ – कोश विज्ञान,व्युत्पत्ति विज्ञान, लिपि विज्ञान, समाज भाषा विज्ञान, भाषा–भूगोल का परिचय।
4. स्वन विज्ञान :– स्वन विज्ञान का स्वरूप, स्वन विज्ञान की शाखाएँ – औच्चारिकी तथा श्रोतिकी, वाग्वयव तथा उनके कार्य, स्वन की परिभाषा, स्वन का वर्गीकरण, स्वर वर्गीकरण– जिव्हा के व्यवहृत भाग, जिव्हा की उँचाई तथा होठों की आकृति के आधार पर मानस्वर, संयुक्त स्वर/व्यंजन वर्गीकरण – स्थान, प्रयत्न और घोषत्व के आधार पर श्रुति, व्यंजन गुच्छ । स्वन गुण – मात्रा, बलाघात, सुर, विवृत्ति । अक्षर स्वरूप, भेद । स्वन परिवर्तन की दिशाएँ, स्वन परिवर्तन के कारण।

5. स्वनिम विज्ञान :– स्वनिम की परिभाषा और स्वरूप, स्वनिम की विशेषताएँ, स्वन और स्वनिम में अंतर, स्वनिमिक विश्लेषण, स्वनिम सादृश्य, व्यतिरेकी तथा परिपूरक वितरण, अभिरचना, अन्विति, लाघव, स्वनिम और संरचना । स्वनिम के भेद – खंडात्मक, अधिखंडात्मक, स्वनिम, लिप्यंकन।
6. रूप विज्ञान :– रूप विज्ञान की परिभाषा और स्वरूप, रूपिम का स्वरूप, रूपिम के भेद – संरचना की दृष्टि से – मुक्त, बध्द, संपृक्त रूप । अर्थ की दृष्टि से – अर्थदर्शी (अर्थतत्व), संबंधदर्शी (संबंधतत्व) । खण्डात्मकता की दृष्टि से – खण्डात्मक और अधिखंडात्मक । संबंध तत्व के भेद, रूप स्वनिम विज्ञान ।
7. वाक्य विज्ञान :– वाक्य की परिभाषा और स्वरूप, अभिहितान्वयवाद अन्विताभिधानवाद । वाक्य की आवश्यकताएँ – योग्यता, आकांक्षा, आसक्ति, वाक्य विश्लेषण – उद्देश्य, विधेय, निकटस्थ अवयव । वाक्य विश्लेषण – मूलवाक्य, रूपांतरित वाक्य, आंतरिक संरचना, बाह्य संरचना । वाक्य के भेद – रचना, क्रिया और अर्थ के आधार पर।
8. अर्थ विज्ञान – अर्थ विज्ञान की परिभाषा और स्वरूप, शब्द और अर्थ का संबंध। अर्थ बोध के साधन – पर्यायता, विलोमता, अनेकार्थतता । अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ, अर्थ परिवर्तन के कारण।
9. भाषा विज्ञान और साहित्य – साहित्य के अध्ययन में भाषा–विज्ञान के अंगों की उपयोगिता ।

संदर्भ ग्रंथ

1. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान – डॉ. राजमल बोरा
3. भाषा विज्ञान की भूमिका–सैध्दांतिक विवेचन – डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा
4. भाषा विज्ञान के सिध्दांत – डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय
5. भाषा विज्ञान–सैध्दांतिक विवेचन – रवींद्र श्रीवास्तव
6. भाषा विज्ञान के सिध्दांत और हिंदी भाषा – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
7. भाषा विज्ञान और भाषाशास्त्र – डॉ. कपिलदेव व्दिवेदी
8. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. केशवदेव रूपाली
9. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. विश्वदेव त्रिगुणायत
10. भाषा विज्ञान की भूमिका – आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा
11. सामान्य भाषा विज्ञान – डॉ. बाबूराम सक्सेना
12. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. कृपाशंकर सिंह
13. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिध्दांत – डॉ. रामकिशोर शर्मा
14. भाषा और भाषा विज्ञान – डॉ. तेजपाल चौधरी
15. भाषा–ब्लूमफील्ड (अनुवादक– डॉ. विश्वनाथ प्रसाद)
16. हिंदी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी

17. हिंदी भाषा का उद्‌भव और विकास – डॉ. उदयनारायण तिवारी
18. हिंदी का उद्‌भव, विकास और रूप – डॉ. हरदेव बाहरी
19. हिंदी की ग्रामीण बोलियाँ – डॉ. हरदेव बाहरी
20. हिंदी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप – डॉ. अंबाप्रसाद 'सुमन'
21. हिंदी भाषा – कैलाशचंद्र भाटिया
22. हिंदी भाषा का इतिहास – डॉ. भोलानाथ तिवारी
23. भारतीय लिपियों की कहानी – गुणाकर मुले
24. नागरी लिपि रूप और सुधार – मोहन ब्रिज
25. नागरी लिपि का उद्‌भव और विकास – डॉ. ओमप्रकाश भाटिया
26. नागरी की लिपि संरचना – डॉ. भोलानाथ तिवारी
27. भारत की भाषाएँ – डॉ. राजमल बोरा
28. हिंदी भाषा का विकासात्मक इतिहास – डॉ. द्‌वारिकाप्रसाद सक्सेना
29. हिंदी भाषा का इतिहास और स्वरूप – डॉ.राममूर्ति शर्मा
30. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. केशवदत्त रूपाली
31. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा की भूमिका – त्रिलोचन पांडेय
32. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा का स्वरूप विकास – डॉ. देवेंद्र प्रताप सिंह
33. भाषा विज्ञान और हिंदी – डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'
34. भाषा शास्त्र तथा हिंदी भाषा की रूपरेखा – डॉ. देवेंद्रकुमार शास्त्री
35. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. राजमणि शर्मा
36. भाषा विज्ञान प्रवेश और हिंदी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी
37. अभिनव भाषा विज्ञान – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
38. आधुनिक भाषा विज्ञान – कृपाशंकर सिंह / चतुर्भुज सहाय

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

समय 3 घंटे (कुल अंक 80)

सूचना : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे ।

पाठ्‌यक्रम पर आधारित सात दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे तथा आठवाँ प्रश्न टिप्पणियों (4 में से 2) का होगा । केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं ।

एम.ए. (हिंदी) तृतीय सत्र
प्रश्न पत्र 11 : विशेष स्तर – हिंदी साहित्य का इतिहास
(आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तक)

उद्देश्य :–

छात्रों को

1. युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर हिंदी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन तथा नामकरण का परिचय देना।
2. आदिकालीन, भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों, प्रतिनिधि कवियों और उनकी रचनाओं से परिचित कराना।
3. जैन, सिध्द, नाथ और अपभ्रंश साहित्य के प्रभाव से अवगत कराना।
4. युगीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग।
4. परिचर्चा।
5. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषयः

हिंदी साहित्य का इतिहास :

हिंदी साहित्य के इतिहास की लेखन परंपरा, सीमा निर्धारण, नामकरण तथा हिंदी साहित्य का काल विभाजन।

आदिकाल :

1. आदिकाल का प्रारंभ – विविध आचार्यों की मान्यताएँ
2. आदिकाल के नामकरण के विविध आधार और विविध नाम – चारणकाल, सिद्ध सामंत काल, बीजवपन काल तथा वीरगाथा काल।

3. आदिकालीन परिस्थितियाँ – सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक और उनका तत्कालीन साहित्य पर प्रभाव।
4. सिध्द साहित्य, नाथ साहित्य और जैन साहित्य।
5. रासो काव्य की परंपरा – 'रासो' शब्द के विभिन्न अर्थ, रासो के प्रकार – जैन रासो, धार्मिक रासो, वीर रासो तथा रासो काव्य की प्रवृत्तियाँ।
6. गोरखनाथ, चंदबरदाई, अमीर खुसरो, विद्यापति आदि का साहित्यिक परिचय।

भक्तिकाल :

1. भक्तिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि – सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक।
2. निर्गुण भक्ति साहित्य और उसकी शाखाएँ – ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी दोनों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।
3. सगुण भक्ति साहित्य और उसकी शाखाएँ– रामभक्ति, कृष्णभक्ति दोनों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।
4. भक्तिकालीन साहित्य की सामाजिक उपादेयता – कबीर, जायसी, सूरदास और तुलसीदास के संदर्भ में।
5. भक्तिकालीन नीति साहित्य का परिचय ।
6. भक्तिकालीन प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – कबीर, जायसी, तुलसीदास, सूरदास, नंददास, मीरा, रहीम, रसखान ।

रीतिकाल :

1. रीतिकाल की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक परिस्थितियाँ।
2. रीतिकालीन साहित्य पर संस्कृत साहित्य तथा भक्तिकालीन हिंदी साहित्य का प्रभाव।
3. रीतिकाल के विविध नाम और उनके आधार।
4. रीतिकालीन साहित्य – रीतिबध्द, रीतिसिध्द तथा रीतिमुक्त काव्य की विषयगत और शैलीगत प्रवृत्तियाँ।
5. रीतिकाल का शृँगारेत्तर साहित्य – भक्ति, वीर तथा नीति।
6. रीतिकालीन प्रमुख कवियों का परिचय – केशवदास, देव, चिंतामणि, सेनापति, मतिराम, पद्‌माकर, घनानंद, बिहारी, भूषण।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – आ. रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – सपां. डॉ. नगेंद्र
3. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त

4. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
5. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
6. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. श्यामचंद्र कपूर (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)
7. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
8. हिंदी साहित्य और उसकी प्रवृत्तियाँ – डॉ. गोविंदराम शर्मा
9. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. जयकिशनप्रसाद खंडेलवाल
10. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास – बाबू गुलाबराय
11. आधुनिक साहित्य का इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
12. हिंदी साहित्य की भूमिका – डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
13. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामकुमार वर्मा
14. हिंदी गद्य : उद्भव और विकास – डॉ. उमेश शास्त्री
15. हिंदी साहित्य : एक परिचय – डॉ. त्रिभुवन सिंह
16. हिंदी साहित्य और संवेदना का इतिहास – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
17. हिंदी रीति साहित्य – डॉ. भगीरथ मिश्र
18. रीतियुगीन काव्य – डॉ. कृष्णचंद्र वर्मा
19. रीतिकाव्य की भूमिका – डॉ. नगेंद्र
20. हिंदी रीतिकालीन पर काव्य संस्कृत काव्य का प्रभाव – डॉ. दयानंद शर्मा
21. आधुनिक हिंदी साहित्य का आदिकाल – श्री. नारायण चतुर्वेदी
22. हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ – डॉ. शिवकुमार शर्मा
23. हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास – डॉ. सभापति मिश्र

24. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. माधव सोनटक्के
25. हिंदी साहित्य का अद्यतन इतिहास – डॉ. मोहन अवस्थी
26. हिंदी साहित्य का सही इतिहास – डॉ. चंद्रभानु सोनवणे/डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
27. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास – डॉ. सुमन राजे
28. हिंदी साहित्य की नवीन विधाएँ – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
29. हिंदी साहित्य का इतिहास : नए विचार नई दिशाएँ – डॉ. सुरेशकुमार जैन
30. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. सज्जनराम केणी
31. हिंदी साहित्य – डॉ. धर्मवीर भारती

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

समय 3 घंटे (कुल अंक 80)

सूचना : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे ।

प्रश्न 1. 'आदिकाल' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न अथवा 'आदिकाल' पर टिप्पणियाँ (3में से 2)16

प्रश्न 2. 'भक्तिकाल' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न अथवा 'भक्तिकाल' पर टिप्पणियाँ (3 में से 2)16

प्रश्न 3. 'रीतिकाल' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न अथवा 'रीतिकाल' पर टिप्पणियाँ (3 में से 2)16

प्रश्न 4. तीनों कालों पर तीन दीर्घोत्तरी प्रश्न, जिनमें से किसी एक का उत्तर अपेक्षित है। 16

प्रश्न 5. (अ) तीनों कालों पर लघुत्तरी प्रश्न (7 में से 5) 10

(आ) एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न (8 में से 6) 06

एम.ए.(हिंदी) तृतीय सत्र

प्रश्न पत्र 12 : विशेष स्तर – वैकल्पिक

(सूचनाः अ,आ,इ में से किसी एक प्रश्नपत्र का अध्ययन करना है)

(अ) आधुनिक हिंदी आलोचना

उद्देश्य :–

छात्रों को :

1. आलोचना के स्वरूप से परिचित कराना ।
2. हिंदी आलोचना के विकास का परिचय देना ।
3. हिंदी के प्रमुख आलोचकों की आलोचना पद्धतियों से अवगत कराना ।
4. हिंदी आलोचकों के प्रदेय से परिचित कराना ।
5. छात्रों में आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कराना ।

अध्यापन पद्धति

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।
4. परिचर्चा ।
5. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषयः

1. आलोचना : स्वरूप, उद्देश्य, आलोचना की प्रक्रिया ।
2. आलोचना के प्रमुख प्रकार, आलोचना और अनुसंधान, आलोचक के गुण ।
3. हिंदी आलोचना का विकास क्रम, हिंदी आलोचना और सर्जनशील साहित्य ।
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषता – हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।
5. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषता – हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।
6. डॉ. नंददुलारे वाजपेयी की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषता – हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।
7. डॉ. नगेंद्र की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषता – हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।
8. डॉ. रामविलास शर्मा की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषताएँ, हिंदी आलोचना में उनका योगदान ।
9. डॉ. नामवर सिंह की आलोचना पद्धति : स्वरूप और विशेषताएँ, हिंदी आलोचना में उनका योगदान।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी आलोचना : स्वरूप और प्रक्रिया – आनंदप्रकाश दीक्षित
2. आचार्य शुक्ल के समीक्षा सिद्धान्त – डॉ. रामलाल सिंह
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना – डॉ. रामविलास शर्मा
4. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व और साहित्य – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
5. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी : व्यक्तित्व और साहित्य – डॉ. रामाधार शर्मा
6. हिंदी आलोचना का इतिहास – डॉ. रामदरश मिश्र
7. हिंदी आलोचना : उद्भव और विकास – भगवत स्वरूप मिश्र
8. हिंदी के विशिष्ट आलोचक – नंदकुमार राय
9. हिंदी आलोचना के आधार स्तंभ – डॉ. रामेश्वर खंडेलवाल
10. हिंदी की सैद्धान्तिक समीक्षा – डॉ. रामाधार शर्मा
11. हिंदी की सैद्धान्तिक आलोचना – डॉ. रूपकिशोर मिश्र
12. हिंदी समीक्षा : स्वरूप और संदर्भ – डॉ. रामदरश मिश्र
13. हिंदी आलोचना की परंपरा और आचार्य रामचंद्र शुक्ल – डॉ. शिवकुमार मिश्र
14. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी – संपा. विश्वनाथ तिवारी
15. डॉ. नगेंद्र के आलोचना सिद्धांत – नारायण प्रसाद चौबे
16. डॉ. रामविलास शर्मा – डॉ. विश्वनाथप्रसाद तिवारी
17. आलोचक रामविलास शर्मा – डॉ. नत्थन सिंह
18. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अधुनातम संदर्भ– डॉ. सत्यदेव मिश्र
19. पाश्चात्य साहित्य सिध्दांत विवेचन – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
20. काव्यशास्त्र – डॉ. सुधाकर कलावडे
21. साहित्य अध्ययन की दृष्टियॉं– संपा. डॉ. उदय भानु सिंह, डॉ. उदय प्रकाश

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

समय 3 घंटे (कुल अंक 80)

सूचना : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे ।

पाठ्यक्रम पर आधारित सात दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे तथा आठवाँ प्रश्न टिप्पणियों (4 में से 2) का होगा। इनमें से केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

एम.ए.(हिंदी) तृतीय सत्र
प्रश्न पत्र 12 : विशेष स्तर – वैकल्पिक
(आ) अनुवाद विज्ञान

उद्देश्य :–

छात्रों को :

1. अनुवाद की परिभाषा, स्वरूप, महत्व एवं व्याप्ति की जानकारी देना।
2. अनुवाद के विविध रूप तथा अनुवाद प्रक्रिया का परिचय देना।
3. अनुवाद के सामाजिक, सांस्कृतिक पक्ष से अवगत कराना।
4. अनुवाद के समय आनेवाली विभिन्न समस्याएँ तथा उनके समाधान से परिचित कराना ।
5. अनुवाद की क्षमता विकसित कराना ।

अध्यापन पद्धति

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।
4. विविध भाषाओं की कृतियों के अनुवाद का अभ्यास ।
5. राजभाषा अधिकारियों के व्याख्यान ।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषय :

1. अनुवाद का स्वरूप : परिभाषा, महत्व एवं व्याप्ति, अनुवाद–कला या विज्ञान।
2. अनुवाद प्रक्रिया : मूलभाषा का पाठबोधन और व्याख्या, लक्ष्यभाषा में अभिव्यक्ति, अनुवाद की प्रक्रियागत स्थितियाँ – अर्थयोग; अर्थहानि; अर्थांतरण; पुनःसर्जन, अनुवाद कार्य में सहायक साधन–कोश, पारिभाषिक शब्दावली, संबंधित ग्रंथ, कम्प्यूटर।
3. अनुवाद का मौखिक तथा लिखित स्वरूप, महत्व एवं वर्तमान काल में उसकी उपयोगिता, अनुवादक की योग्यता ।
4. अनुवाद के प्रकार : प्रक्रिया के आधार पर – शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद पर, रूपांतरण । गद्य–पद्य के आधार पर – गद्यानुवाद, पद्यानुवाद। विधा के आधारपर – नाट्यानुवाद, काव्यानुवाद, कथानुवाद आदि ।
5. अनुवाद और लिप्यंतरण : आवश्यकता, समस्याएँ ।
6. अनुवाद और भाषा विज्ञान : भाषाविज्ञान के अंग और अनुवाद, अनुवाद और रूपविज्ञान, अनुवाद और वाक्यविज्ञान, अनुवाद और अर्थविज्ञान।
7. वैज्ञानिक और तकनीकी सामग्री का अनुवाद : स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएँ, सीमाएँ।

8. वाणिज्य और व्यवसाय क्षेत्र की सामग्री का अनुवाद : स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएँ, सीमाएँ।
9. बैंक तथा अन्य कार्यालयों में अनुवाद की सामग्री : स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएँ, सीमाएँ।
10. कम्प्यूटर अनुवाद : आवश्यकता, समस्याएँ तथा सीमाएँ।
11. अनुवाद की समस्याएँ – मुहावरों और कहावतों का अनुवाद, अलंकारों का अनुवाद, काव्यानुवाद, नाट्यानुवाद।
12. अनुवाद समीक्षा : आवश्यकता और निकष।

संदर्भ ग्रंथ

1.अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा – डॉ. सुरेश कुमार
2.अनुवाद विज्ञान – भोलानाथ तिवारी
3.अनुवाद सिद्धान्त और व्यवहार – डॉ. एस. के. शर्मा
4.अनुवाद विज्ञान : सिद्धान्त और अनुप्रयोग – संपा. डॉ. नगेंद्र
5.अनुवाद : सिद्धान्त एवं प्रयोग – डॉ. जी. गोपीनाथन
6.अनुवाद कला : सिद्धान्त और प्रयोग – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
7.अनुवाद सिद्धान्त और समस्याएँ – डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव / डॉ कृष्णकुमार गोस्वामी
8.अनुवाद बोध – संपा. डॉ. गार्गी गुप्त
9.काव्यानुवाद की समस्याएँ : साहित्य का अनुवाद – डॉ. भोलानाथ तिवारी / महेंद्र चतुर्वेदी
10.अनुवाद भाषाएॅ – समस्याएॅ डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
11.अनुवाद और मशीनी अनुवाद – डॉ. वृषभप्रसार जैन
12.अनुवाद कला – डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
13.अनुवाद क्या हैं – डॉ. राजमल बोरा (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
14.अनुवाद विज्ञान और संप्रेषण – डॉ. हरीमोहन (तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली)
15.हिंदी में व्यवहारिकता अनुवाद – डॉ. अलोक कुमार रस्तोगी
16.अनुवाद विज्ञान – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

समय 3 घंटे (कुल अंक 80)

सूचना : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे ।

पाठ्यक्रम पर आधारित सात दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे तथा आठवाँ प्रश्न टिप्पणियों (4 में से 2) का होगा । इनमें से केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं ।

एम.ए.(हिंदी) तृतीय सत्र
प्रश्न पत्र 12 : विशेष स्तर – वैकल्पिक
(इ) जनसंचार माध्यम और हिंदी

उद्देश्य :–

छात्रों को :

1. जनसंचार के माध्यमों का स्वरूप, उद्देश्य, प्रकारों का परिचय देना।
2. संचार तकनीकी के स्वरूप तथा इतिहास से अवगत कराना।
3. सूचना समाज की अवधारणा तथा आवश्यकताओं की जानकारी देना।
4. जनसंचार माध्यमों की विविध भाषिक प्रयुक्तियों का परिचय देना।
5. जनसंचार और मीडिया का हिंसा पर प्रभाव।
6. हिंदी पत्रकारिता का परिचय देना।
7. मीडिया द्वारा हिंदी में हो रहे परिवर्तनों का वैश्विक स्तर के परिप्रेक्ष्य में परिचय देना।
8. इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के संदर्भ में हिंदी भाषा के मानकीकरण का परिचय देना।
9. जनसंचार माध्यमों में काम करने की दृष्टि से छात्रों की क्षमता बढ़ाना।

अध्यापन पद्धति

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।
4. जनसंचार क्षेत्र से संबंधित संस्थाओं की अध्ययन यात्रा ।
5. जनसंचार क्षेत्र से संबंधित विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषय :

1. जनसंचार माध्यम : स्वरूप, कार्य, उद्देश्य, सूचना–प्रौद्योगिकी के विविध रूप, इलेक्ट्रानिक अंतर्ग्रथन।
2. भारतीय संचार तकनीकी : इतिहास, विकासमूलक तथा लोकतांत्रिक संचार, वैश्विकीकरण की प्रक्रिया और जनसंचार।
3. सूचना समाज की अवधारणा और शर्तें।

4. भाषा की सूचनात्मक क्षमता : सूचना–निर्माण, सूचना–शैली, सूचना–संप्रेषण, वाचिक भाषा, लेखन भाषा।

5. जनसंचार माध्यमों के विविध हिंदी भाषा रूप : समाचार, विज्ञापन, विज्ञान एवं अनुसंधान से संबंधित कार्यक्रम,जनशिक्षा, साक्षात्कार, सर्वेक्षण वृत्तांत, साहित्य प्रसारण, सामायिक कार्यक्रम, निवेदन, कृषि केंद्रित कार्यक्रम, बच्चों के कार्यक्रम, चर्चा विश्लेषण, खेल, संगीत, धार्मिक कार्यक्रम, सीधा प्रसारण आदि के हिंदी भाषा रूप।
6. जनसंचार माध्यम और हिंदी साहित्य : जनसंचार माध्यमों में साहित्य की आवश्यकता, जनसंचार माध्यमों से संबंधित हिंदी साहित्य ।
7. हिंदी पत्रकारिता के विविध रूप : प्रिंटमीडिया (समाचार पत्र), रेडियो की पत्रकारिता, दूरदर्शन की पत्रकारिता, इंटरनेट की पत्रकारिता, पारस्परिक साम्य–वैषम्य।
8. जनसंपर्क माध्यमों में अनुवाद प्रक्रिया : अनुवाद की आवश्यकता, अंग्रेजी से हिंदी, हिंदी से अंग्रेजी, प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद, हिंदी पर अंग्रेजी का प्रभाव।
9. इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के संदर्भ में हिंदी भाषा का मानकीकरण : आवश्यकता, भाषा नियोजन–नीति, भाषा–स्थिरता, भाषा–विस्तार, किताबी भाषा और माध्यमों की भाषा का अंतर।
10. हिंदी से संबंधित तकनीकी ज्ञान : कम्प्यूटर– एम.एस.वर्ड, फोटोशॉप, कवर डिजाइनिंग, ग्राफिक्स, डी.टी.पी., मल्टी मीडिया, इंटरनेट, वेबसाइट, इ–कॉमर्स आदि का सामान्य परिचय।

संदर्भ ग्रंथ

1. जनमाध्यम प्रौद्योगिकी और विचारधारा – जगदीश्वर चतुर्वेदी
2. जनसंचार माध्यम : चुनौतियाँ और दायित्व – डॉ. त्रिभुवन राय (श्याम प्रकाशन, जयपुर)
3. जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र – जवरीमल्ल पारीख
4 हिंदी पत्रकारिता के इतिहास की भूमिका – जगदीश्वर चतुर्वेदी
5. मीडिया विमर्श – रामशरण जोशी
6. परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम – पूरनचंद्र जोशी
7. मीडिया और साहित्य – सुधीर पचौरी
8. साइबर स्पेस और मीडिया – सुधीर पचौरी
9. साहित्य का उत्तरकांड – सुधीर पचौरी
10. दूरदर्शन : सम्प्रेषण और संस्कृति – सुधीर पचौरी
11. दूरदर्शन : विकास से बाजार तक – सुधीर पचौरी
12. ब्रेक के बाद – सुधीर पचौरी
13. इक्कीसवीं सदी और हिंदी पत्रकारिता – अमरेंद्र कुमार
14. एक जनभाषा की त्रासदी – गिरिराज किशोर
15. सूचना समाज – जगदीश्वर चतुर्वेदी
16. हिंदी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ – डॉ. विनोद गोदरे
17. पत्रकारिता और जनसंचार – डॉ. ठाकुरदत्त 'आलोक' (वाणी प्रकाशन,दिल्ली)

18. प्रसार भारती प्रसारण नीति – सुधीर पचौरी (वाणी प्रकाशन,दिल्ली)
19. हिंदी पत्रकारिता का बृहत् इतिहास – डॉ. अर्जुन तिवारी (वाणी प्रकाशन,दिल्ली)
20. आधुनिक जनसंचार और हिंदी – प्रो. हरिमोहन (तक्षशिला, प्रकाशन,दिल्ली)
21. रेडिओ और दूरदर्शन पत्रकारिता – प्रो. हरिमोहन (तक्षशिला, प्रकाशन,दिल्ली)
22. दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी – डी.डी. ओझा, सत्यप्रकाश (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)
23. मास कम्युनिकेशन थ्योरी – मेक्कनिल डेनिश
24. इंट्रोडक्शन ऑफ इन्फर्मेशन टेक्नोलॉजी इन इंडिया – संपा. अवरोल,दिनेश अशोक जैन
25. टेक्नोलॉजिकल चेंज इन द इन्फर्मेशन इकोनॉमी – मोंक, पीटर
26. कम्प्यूटर गाइड – शशिकांत बाकरे
27. इंटरनेट एण्ड वर्ल्डवाइड वेब सिंफ्लीफाइड – रूथ मारन

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

समय 3 घंटे (कुल अंक 80)

सूचना : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे ।

पाठ्यक्रम पर आधारित सात दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे तथा आठवाँ प्रश्न टिप्पणियों (4 में से 2) का होगा । इनमें से केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं ।

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र

प्रश्न पत्र 13 : सामान्य स्तर – आधुनिक काव्य II

(खंडकाव्य, विशेष कवि तथा नई कविता)

उद्देश्य

1. छात्रों को आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय कराना।
2. छात्रो को आधुनिक काल के प्रबंध और मुक्त काव्य के तात्विक स्वरूप की जानकारी देना।
3. आधुनिक युग में इन काव्य प्रकारों के विकासक्रम से परिचित कराना।
4. छात्रों को आधुनिक काव्य प्रकारों के तात्विक स्वरूप एवं विकासक्रम के परिप्रेक्ष्य में रचनाओं के आस्वादन, अध्ययन और मूल्यांकन की दृष्टि देना।

अध्यापन पद्धति

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग।
4. परिचर्चा।
5. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

(1)कितने प्रश्न करूँ : ममता कालिया (खंडकाव्य)

प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, 21,दरियागंज ,नई दिल्ली

अध्ययनार्थ विषय :

1. खंडकाव्य स्वरुप, विशेषताएँ
2. 'कितने प्रश्न करुँ' : की कथावस्तु
3. 'कितने प्रश्न करुँ' में चरित्रांकन
4. 'कितने प्रश्न करुँ' : का उद्देश्य
5. 'कितने प्रश्न करुँ' : का शिल्प तथा कलापक्ष – भाषा, बिंब विधान, प्रतीक योजना, अंलकार और छंद योजना ।

(2)युग धारा : नागार्जुन

प्रकाशक : यात्री प्रकाशन, बी–13 सादतपुर, दिल्ली 110094 संस्करण 1994

निम्नलिखित कविताएँ –

1. भिक्षुणी
2. पाषाणी
3. शपथ
4. बादल को घिरते देखा है
5. भारत माता
6. उद्बोधन
7. धरती
8. प्रेत का बयान
9. एटमबम
10. स्वदेशी शासक

अध्ययनार्थ विषय :

1. नागार्जुन के काव्य की विशेषताएँ
2. नागार्जुन के काव्य में यथार्थ बोध
3. नागार्जुन के काव्य की प्रगतिशीलता
4. नागार्जुन के काव्य की भाषा
5. नागार्जुन के काव्य का शिल्प

(3)काव्य कुंज : संपादक : रमाशंकर राय 'सौमित्र'
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 02

केवल निम्नलिखित कवियों की कविताएँ

1. गिरिजाकुमार माथुर
2. भवानीप्रसाद मिश्र

अध्ययनार्थ विषय :

1. नई कविता की भावगत एवं शिल्पगत विशेषताएँ
2. गिरिजाकुमार माथुर के काव्य की भावगत एवं शिल्पगत विशेषताएँ
3. भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य की भावगत एवं शिल्पगत विशेषताएँ
4. गिरिजाकुमार माथुर की कविताओं का मूल्यांकन
5. भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं का मूल्यांकन

संदर्भ ग्रंथ

1. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर – डॉ. संतोषकुमार तिवारी
2. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
3. नागार्जुन एक लंबी जिरह – विष्णुचंद्र शर्मा

4. नागार्जुन जीवन और साहित्य – डॉ. प्रकाश चंद्र भट्ट
5. नागार्जुन की कविता – अजय तिवारी
6. भवानीप्रसाद मिश्र की काव्य यात्रा –डॉ. संतोष कुमार तिवारी
7. कालजयी कवि भवानीप्रसाद मिश्र – डॉ. हरिमोहन
8. काव्य रूप संरचना : उद्भव और विकास – सुमन राजे
9. आधुनिक हिंदी काव्य में रूप विधाएँ – डॉ. निर्मला जैन
10. हिंदी राम काव्य का स्वरूप और विकास : बदलते युग बोध के परिप्रेक्ष्य में – डॉ. प्रेमचंद्र महेश
11. ममता कालिया : व्यक्तित्व और कृतित्व– फैमिना विजापुरे
12. नागार्जुन का काव्य – डॉ. चंद्रहास सिंह
13. नागार्जुन का काव्य एक पडताल – भगवान तिवारी
14. प्रगतिशील चेतना और नागार्जुन का काव्य – डॉ. अनिल कुमार
15. गिरीजा कुमार माथुर और उनका काव्य – डॉ. दुर्गाशंकर माथुर
16. गिरीजा कुमार माथुर नयी कविता के परिप्रेक्ष्य में – विजय कुघारी
17. भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य संसार – कृष्ण दत्त पालिवाल
18. भवानी भाई – संपा. प्रेमशंकर रघुवंशी

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

समय 3 घंटे (कुल अंक 80)

सूचना :I- सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे।

II- प्रश्न 5 ससंदर्भ व्याख्या का प्रश्न अनिवार्य होगा।

प्रश्न 1.'कितने प्रश्न करूँ' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न **अथवा** 'कितने प्रश्न करूँ' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न

प्रश्न 2. 'युगधारा' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न **अथवा** 'युगधारा' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न

प्रश्न 3. 'काव्य कुंज' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न अथवा ''काव्य कुंज'' पर दीर्घोत्तरी प्रश्न

प्रश्न 4. तीनो पुस्तकों के अन्तर्गत विकल्प के साथ 6 टिप्पणियाँ पूछी जाएगी उनमें से तीनों के उत्तर अपेक्षित है।

प्रश्न 5. ससंदर्भ व्याख्या (3 में से 2) यह प्रश्न अनिवार्य होगा

(क) 'कितने प्रश्न करूँ' अथवा 'कितने प्रश्न करूँ'

(ख) 'युगधारा' अथवा 'युगधारा'

(ग) 'काव्य कुंज' अथवा ' काव्य कुंज'

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र

प्रश्न पत्र 14 : विशेष स्तर

हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकास

उद्‌देश्य :–

छात्रों को

1. हिंदी गद्य के अविर्भाव के प्रधान कारणों, परिस्थितियों का परिचय देना।
2. विषयवस्तु, भाषाशैली, शिल्प, विचारधारा, प्रभाव ग्रहण आदि के परिप्रेक्ष्य में प्रवृत्तियों को समझाते हुए हिंदी की प्रमुख गद्य विधाओं के विकासक्रम से परिचित कराना तथा प्रमुख गद्यकारों का परिचय देना।
3. आधुनिक हिंदी कविता के विकास के प्रमुख चरणों की प्रवृत्तियों, उपलब्धियों तथा सीमाओं से अवगत कराना।

अध्यापन पद्‌धति

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग।
4. परिचर्चा।
5. अतिथि विद्‌वानों के व्याख्यान।

पाठ्‌यक्रम

१. **हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–**
   प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ – वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत और इनकी विशेषताएँ।
   मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ :– पालि, प्राकृत, शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्धमागधी, पैशाची, अपभ्रंश तथा उनकी विशेषताएँ।

२. **आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और उनका वर्गीकरण** – हार्नली, ग्रियर्सन (अंतिम वर्गीकरण) चटर्जी और हरदेव बाहरी द्‌वारा किया गया वर्गीकरण तथा उनकी व्याकरणिक विशेषताएँ।

3 **हिंदी की उपभाषाएँ और बोलियाँ** – वर्गीकरण – पूर्वी हिंदी व पश्चिमी हिंदी की तुलना, खडीबोली, ब्रज और अवधी की व्याकरणिक विशेषताएँ।

4. **हिंदी का शब्द भंडार** :– तत्सम, अर्धतत्सम, तद्‌भव, देशी, विदेशी शब्द।

5. **हिंदी का शब्द निर्माण** :– उपसर्ग, प्रत्यय, समास।
6. **हिंदी का व्याकरणिक स्वरूप और विकास** :– रूप रचना– लिंग, वचन और कारक–व्यवस्था के संदर्भ में हिंदी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया रूप तथा अव्ययों का विकास ।
7. **हिंदी के विविध रूप** :– संपर्क भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संचार भाषा।
8. **लिपि विज्ञान** :– लिपि का उद्‌भव और विकास, खरोष्ठी और ब्राह्मी लिपि। देवनागरी लिपि – उद्‌भव और विकास, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता (मानकीकरण), देवनागरी लिपि में सुधार।

9. **हिंदी में कम्प्यूटर सुविधाएँ** :– आंकडॉ–संसाधन और शब्द–संसाधन, वर्तनी–शोधक, मशीनी–अनुवाद, हिंदी भाषा शिक्षण।

संदर्भ ग्रंथ

1. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान – डॉ. राजमल बोरा
3. भाषा विज्ञान की भूमिका–सैध्दांतिक विवेचन – डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा
4. भाषा विज्ञान के सिध्दांत – डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय
5. भाषा विज्ञान–सैध्दांतिक विवेचन – रवींद्र श्रीवास्तव
6. भाषा विज्ञान के सिध्दांत और हिंदी भाषा – द्‌वारिकाप्रसाद सक्सेना
7. भाषा विज्ञान और भाषाशास्त्र – डॉ. कपिलदेव व्दिवेदी
8. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. केशवदेव रूपाली
9. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. विश्वदेव त्रिगुणायत
10. भाषा विज्ञान की भूमिका – आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा
11. सामान्य भाषा विज्ञान – डॉ. बाबूराम सक्सेना
12. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. कृपाशंकर सिंह
13. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिध्दांत – डॉ. रामकिशोर शर्मा
14. भाषा और भाषा विज्ञान – डॉ. तेजपाल चौधरी
15. भाषा–ब्लूमफील्ड (अनुवादक– डॉ. विश्वनाथ प्रसाद)
16. हिंदी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी
17. हिंदी भाषा का उद्‌भव और विकास – डॉ. उदयनारायण तिवारी
18. हिंदी का उद्‌भव, विकास और रूप – डॉ. हरदेव बाहरी
19. हिंदी की ग्रामीण बोलियाँ – डॉ. हरदेव बाहरी
20. हिंदी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप – डॉ. अंबाप्रसाद 'सुमन'
21. हिंदी भाषा – कैलाशचंद्र भाटिया
22. हिंदी भाषा का इतिहास – डॉ. भोलानाथ तिवारी
23. भारतीय लिपियों की कहानी – गुणाकर मुले
24. नागरी लिपि रूप और सुधार – मोहन ब्रिज
25. नागरी लिपि का उद्‌भव और विकास – डॉ. ओमप्रकाश भाटिया
26. नागरी की लिपि संरचना – डॉ. भोलानाथ तिवारी

27. भारत की भाषाएँ – डॉ. राजमल बोरा
28. हिंदी भाषा का विकासात्मक इतिहास – डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
29. हिंदी भाषा का इतिहास और स्वरूप – डॉ. राममूर्ति शर्मा
30. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. केशवदत्त रूपाली
31. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा की भूमिका – त्रिलोचन पांडेय
32. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा का स्वरूप विकास – डॉ. देवेंद्र प्रताप सिंह
33. भाषा विज्ञान और हिंदी – डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'
34. भाषा शास्त्र तथा हिंदी भाषा की रूपरेखा – डॉ. देवेंद्रकुमार शास्त्री
35. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. राजमणि शर्मा
36. भाषा विज्ञान प्रवेश और हिंदी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी
37. अभिनव भाषा विज्ञान – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
38. आधुनिक भाषा विज्ञान – कृपाशंकर सिंह / चतुर्भुज सहाय

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

समय 3 घंटे (पूर्णांक 80)

सूचना : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे ।

पाठ्यक्रम पर आधारित सात दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे तथा आठवाँ प्रश्न टिप्पणियों (4 में से 2) का होगा । केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं ।

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र

प्रश्न पत्र 15 : विषेश स्तर – हिंदी साहित्य का इतिहास

(आधुनिक काल)

उद्देश्य :–

छात्रों को

1. हिंदी गद्य के अविर्भाव के प्रधान कारणों, परिस्थितियों का परिचय देना।
2. विषयवस्तु, भाषाशैली, शिल्प, विचारधारा, प्रभाव ग्रहण आदि के परिप्रेक्ष्य में प्रवृत्तियों को समझाते हुए हिंदी की प्रमुख गद्य विधाओं के विकासक्रम से परिचित कराना तथा प्रमुख गद्यकारों का परिचय देना।
3. आधुनिक हिंदी कविता के विकास के प्रमुख चरणों की प्रवृत्तियों, उपलब्धियों तथा सीमाओं से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग।
4. परिचर्चा।
5. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

(क) हिंदी गद्य का निर्माण

1. हिंदी गद्य के आविर्भाव के लिए प्रेरक परिस्थितियाँ।
2. भारतेंदुपूर्व काल के हिंदी गद्य का सामान्य परिचय – विशेषताएँ, प्रमुख गद्यकार, फोर्ट विलियम कॉलेज, ईसाई मिशनरी, आर्य समाज, ब्राह्मो समाज आदि का योगदान और हिंदी गद्य।
3. भारतेंदुयुगीन गद्य – साहित्य का स्वरूप और विशेषताएँ।
4. द्विवेदीयुगीन हिंदी साहित्य – साहित्य का स्वरूप और सामान्य विशेषताएँ, साहित्य विषयक मान्यता, राष्ट्रीय भावना, सुधारवादी दृष्टि, भाषा सुधार।

(ख) हिंदी गद्य विधाओं का विकास :

1. **हिंदी उपन्यास साहित्य का विकास :** प्रेमचंदपूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग (संबंधित युग के उपन्यास साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय)
   प्रमुख उपन्यासकारों का विशेष परिचय : प्रेमचंद, जैनेंद्रकुमार, हजारीप्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, यशपाल, वृंदावनलाल वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु, रामदरश मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, कृष्णा सोबती ।

2. **हिंदी कहानी साहित्य का परिचय :** प्रेमचंदपूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, नई कहानी, साठोत्तरी कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी (संबंधित युग के कहानी साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय)
   प्रमुख कहानीकारों का विशेष परिचय : प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्रकुमार, कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, ज्ञानरंजन, उदय प्रकाश।

3. **हिंदी नाटक का उद्‌भव और विकास :** भारतेंदुपूर्व युग, भारतेंदु युग जयशंकर प्रसाद, प्रसादोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग (संबंधित युग के नाट्य साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय)

   प्रमुख नाटककारों का विशेष परिचय : भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, जगदीशचंद्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण मिश्र, मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, शंकर शेष, सुरेंद्र वर्मा।

4. **हिंदी निबंध का इतिहास :** भारतेंदुपूर्व युग, भारतेंदु युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग (संबंधित युग के निबंध साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय)
   प्रमुख निबंधकारों का विशेष परिचय : पं. प्रतापनारायण मिश्र, आ. रामचंद्र शुक्ल, आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, हरिशंकर परसाई।

5. **हिंदी आलोचना का उद्‌भव और विकास :** भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग (संबंधित युग के आलोचना साहित्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय)
   प्रमुख आलोचकों का विशेष परिचय : आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी, आ. रामचंद्र शुक्ल, आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, आ. नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. नामवर सिंह, डॉ. नगेंद्र।

(ग) आधुनिक हिंदी काव्य का विकास :

1. **भारतेंदुयुगीन कविता** : सामान्य प्रवृत्यियाँ, भारतेंदुयुगीन प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – भारतेंदु हरिश्चंद्र, पं.बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
2. **द्विवेदीयुगीन हिंदी कविता** : सामान्य प्रवृत्यियाँ द्विवेदी युगीन प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – मैथिलीशरण गुप्त, पं. श्रीधर पाठक
3. **राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा की कविता** : सामान्य प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर'
4. **छायावादी कविता** : उद्भव के कारण, सामान्य प्रवृत्यियाँ, सीमाएँ प्रमुख छायावादी कवियों का सामान्य परिचय – पंत, प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा।
5. **प्रगतिवादी कविता** : उद्भव के कारण, सामान्य प्रवृत्तियाँ, सीमाएँ, प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल।
6. **प्रयोगवादी कविता** : उद्भव के कारण, सामान्य प्रवृत्तियाँ।
7. **नई कविता** : सामान्य प्रवृत्यियाँ, प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय – अज्ञेय, मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय।
8. **साठोत्तरी कविता सामान्य प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय** – धूमिल, दुष्यंत कुमार, लीलाधर जगुडी, केदारनाथ सिंह, चंद्रकांत देवताले, मंगलेश डबराल।
9. **समकालीन कविता और उसकी विशेषताएँ**

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – आ. रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – सपां. डॉ. नगेंद्र
3. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
4. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
5. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
6. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. श्यामचंद्र कपूर (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)
7. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
8. हिंदी साहित्य और उसकी प्रवृत्तियाँ – डॉ. गोविंदराम शर्मा
9. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. जयकिशनप्रसाद खंडेलवाल
10. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास – बाबू गुलाबराय
11 .आधुनिक साहित्य का इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
12. हिंदी साहित्य की भूमिका – डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
13. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामकुमार वर्मा
14. हिंदी गद्य : उद्भव और विकास – डॉ. उमेश शास्त्री
15. हिंदी साहित्य : एक परिचय – डॉ. त्रिभुवन सिंह
16. हिंदी साहित्य और संवेदना का इतिहास – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

17. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
18. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य – रामरतन भटनागर
19. हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ – डॉ. शिवकुमार शर्मा
20. हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास – डॉ. सभापति मिश्र
21. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. माधव सोनटक्के
22. हिंदी साहित्य का अद्यतन इतिहास – डॉ. मोहन अवस्थी
23. हिंदी साहित्य का सही इतिहास – डॉ. चंद्रभानु सोनवणे/डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
24. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास – डॉ. सुमन राजे
25. हिंदी साहित्य की नवीन विधाएँ – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
26. हिंदी साहित्य का इतिहास : नए विचार नई दिशाएँ – डॉ. सुरेशकुमार जैन
27. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. सज्जनराम केणी
28. हिंदी साहित्य – डॉ. धर्मवीर भारती

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

समय 3 घंटे (कुल अंक 80)

सूचना : I. सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे।
II. प्रश्न क्रमांक 6 तथा 7 अनिवार्य होगा।

1. 1 से 5 दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे जिनमें से किन्हीं तीन के उत्तर अपेक्षित हैं। 48

2. प्रश्न क्र. 6 टिप्पणियों का होगा, जिनमें 5 टिप्पणियाँ पूछी जाएँगी 2 के उत्तर अपेक्षित हैं । 16

3. प्रश्न क्र. 7 (अ) लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 4) 12
(आ) एक वाक्यीय प्रश्न (6 में से 4) 04

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र

प्रश्न पत्र 16 : विशेष स्तर – वैकल्पिक

(सूचनाः क,ख,ग में से किसी एक विषय का अध्ययन करना है)

(क) भारतीय साहित्य

उद्देश्य :–

छात्रों को

1. हिंदी साहित्य के आखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य से परिचित कराना।
2. हिंदीत्तर भाषाओं के साहित्य का स्थूल परिचय देना।
3. भारतीय साहित्य में व्यक्त भारतीयता की पहचान कराना ।
4. हिंदी में अनूदित साहित्य परिचय देना।
5. साहित्यिक अनुवाद के आस्वादन एवं मूल्यांकन को विकसित करना।

अध्यापन पद्धति

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग।
4. विविध भाषाओं के साहित्यकारों से साक्षात्कार।
5. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषय :

1. भारतीय साहित्य का स्वरूप
2. भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ
3. भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब
4. भारतीयता और समाजशास्त्र
5. हिंदी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

अध्ययनार्थ साहित्य कृतियाँ

1. (कन्नड) हयवदन : डॉ. गिरीश कर्नाड
   प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन, अन्सारी रोड, दिल्ली
2. (तमिल) अधूरे मनुष्य : डी. जयकांतन
   अनुवादक : के. ए. जमुना
   प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
3. (बंगला) 1084 वें की माँ : महाश्वेता देवी
   प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय साहित्य – संपा. डॉ. नगेंद्र
2. आज का भारतीय साहित्य – संपा. साहित्य अकादमी
3. हिंदी साहित्य के विकास में दक्षिण का योगदान – संपा. रेड्डी राव/अप्पल राजु
4. मराठी साहित्य : परिप्रेक्ष्य – संपा. डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर
5. बंगला साहित्य का इतिहास – डॉ. बॅनर्जी
6. भारतीय साहित्यकारों से साक्षात्कार – डॉ. रणवीर रांग्रा
7. भारतीय साहित्य – डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय/डॉ. प्रमिला अवस्थी अशिश प्रकाशन, कानपुर
8. भारतीय साहित्याची संकल्पना – संपा. द.दि. पुंडे /डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर अभिनंदन ग्रंथ पद्मजा घोरपडे प्रतिया प्रकाशन, पुणे – 30
9. भारतीय साहित्य विमर्श – संपा. रामजी तिवारी परिदृश्य प्रकाशन, मुबंई
10. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास – संपा. डॉ. नगेंद्र, हिंदी माध्यम कार्यान्वयव निदेशालय, नई दिल्ली
11. भारतीयता की पहचान – डॉ. विद्यानिवास मिश्र
12. कैसी है यह भारतीयता – यू. आर. अनंतमूर्ति
13. संस्कृति की उत्तरकथा – शंम्भुनाथ
14. भारतीय साहित्य – डॉ. रामछबीला त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
15. भारतीय साहित्य : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य – इन्दुनाथ चौधरी (वाणी)
16. समकालीन भारतीय साहित्य (पत्रिका)
17. भारतीय साहित्य : अवधारणा, स्वरुप और समस्याएँ – के.सच्चिदानंद (वाणी)

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

समय 3 घंटे (कुल अंक 80)

सूचना : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे ।

पाठ्यक्रम पर आधारित सात दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे तथा आठवाँ प्रश्न टिप्पणियों (4 में से 2) का होगा । केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं ।

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र

प्रश्न पत्र 16 : विशेष स्तर – वैकल्पिक

(ख) लोकसाहित्य

उद्देश्य :–

छात्रों को

1. लोकसाहित्य के स्वरूप तथा उसके अध्ययन के महत्व से परिचित कराना।
2. लोकसाहित्य की विविध विधाओं की जानकारी देना तथा लोकजीवन में उसकी व्यापकता समझाना।
3. लोकसाहित्य का महत्व समझाकर उसके विशेष अध्ययन के लिए प्रेरित करना।
4. महाराष्ट्र के लोकसाहित्य से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग।
4. लोक–साहित्यकारों से साक्षात्कार।
5. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषय :

1. 'लोक' शब्द की व्युत्पत्ति, स्वरूप, लोकसाहित्य का स्वरूप – परिभाषाएँ तथा विशेषताएँ, लोकसाहित्य और शिष्ट साहित्य में साम्य–भेद । लोकवार्ता का स्वरूप ।
2. लोकसाहित्य का सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय तथा भाषा शास्त्रीय दृष्टि से महत्व ।
3. लोकसाहित्य और अन्य ज्ञानशाखाओं का परस्पर संबंध– इतिहास, पुरातत्व, मानव विज्ञान, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, भाषा विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र ।
4. लोकसाहित्य संकलन : उद्देश्य, संकलन की पद्धतियाँ, संकलनकर्ता की क्षमताएँ, संकलनकर्ता के लिए उपयुक्त साधन सामग्री, संकलनकर्ता की समस्याएँ तथा समाधान ।
5. लोकगीत : परिभाषाएँ, विशेषताएँ और प्रेरणा स्त्रोत, लोकगीत और शिष्टगीत में अंतर, लोकगीतों के वर्गीकरण की पद्धतियाँ, लोकगीतों का परिचय– सोहर,

मुंडन, विवाह, गौना, होली, सावनगीत आदि । गडरिया, चक्की की ओवियाँ, पवाडा, लावनी आदि।

6. लोकगाथा : परिभाषाएँ एवं स्वरूप, लोकगाथा के उत्पत्तिविषयक सिद्धांत, किसी एक लोकगाथा का सामान्य परिचय– ढोला–मारू रा दूहा, नल–दमयंती, लैला–मजनू, हीर–राँझा, सोहनी–महीवाल, लोरिक–चंदा आदि।
7. लोककथा : परिभाषा एवं स्वरूप, विशेषताएँ, लोककथा में अभिप्राय का महत्व, लोककथा के उत्पत्तिविषयक सिद्धांत, लोककथाओं का वर्गीकरण।
8. लोकनाट्य : परिभाषा एवं स्वरूप, विशेषताएँ, लोकनाट्य और शास्त्रीय नाटक में अंतर, लोकनाट्यों का परिचय– रामलीला, रासलीला, कीर्तन, यक्षगान, जात्रा, भवाई, ख्याल, माँच, नौटंकी, कुचिपुडी, तमाशा, गोंधळ।
9. प्रकीर्ण लोकसाहित्य : मुहावरे, कहवतें, पहेलियाँ,मुकरियाँ, सूक्तियाँ, ढकोसले, चुटकुले, मंत्र, टोना आदि का परिचय।
10. लोकसाहित्य का कलापक्ष : भावव्यंजना, रसपरिपाक, भाषा, अलंकार–योजना, छंद–विधान, प्रतीकात्मकता आदि दृष्टियों से विवेचन ।

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. भारतीय लोकसाहित्य – डॉ. श्याम परमार
2. लोकसाहित्य की भूमिका – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
3. लोकसाहित्य : सिद्धान्त और प्रयोग – डॉ. श्रीराम शर्मा
4. लोक साहित्य के प्रतिमान–डॉ. कुंदनलाल उप्रैति
5. खडीबोली का लोकसाहित्य – डॉ. सत्यगुप्त
6. लोकसाहित्य का विज्ञान– डॉ. सत्येंद्र
7. लोकवार्ता और लोकगीत – डॉ. सत्येंद्र
8. लोकसाहित्य का अध्ययन –डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

समय 3 घंटे (कुल अंक 80)

सूचना : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे ।

पाठ्यक्रम पर आधारित सात दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे तथा

आठवाँ प्रश्न टिप्पणियों (4 में से 2) का होगा । इनमें से केवल पाँच

प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं ।

एम.ए.(हिंदी) चतुर्थ सत्र

प्रश्न पत्र 16 : विशेष स्तर – वैकल्पिक

(ग) हिंदी पत्रकारिता

उद्देश्य :–

छात्रों को

1. पत्रकारिता का स्वरूप एवं उपयोजन की जानकारी देना।
2. पत्रकारिता के विविध आयामों से परिचित कराना।
3. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पत्रकारिता के स्वरूप एवं उपयोजन की जानकारी देना।
4. पत्रकारिता प्रबंधन के संदर्भ में आवश्यक तथ्यों से अवगत कराना।
5. प्रेस के संदर्भ में भारतीय संविधान में समाविष्ट अधिकारों का ज्ञान कराना।

अध्यापन पद्धति

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग।
4. विविध समाचारपत्रों के दफ्तरों में अध्ययन यात्रा।
5. पत्रकारिता के क्षेत्र से जुड़े विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यक्रम

अध्ययनार्थ विषयः

1. पत्रकारिता का स्वरूप और प्रमुख पत्रकार।
2. विश्व पत्रकारिता का उदय, भारत में पत्रकारिता का आरंभ, हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास।
3. पत्रकारिता के मूल तत्व – समाचार संकलन तथा लेखन के मुख्य आयाम, समाचार पत्रों के विभिन्न स्तंभों की योजना।
4. संपादन कला : सामान्य सिद्धांत शीर्षकीकरण, पृष्ठ विन्यास, आमुख और समाचार पत्र की प्रस्तुति प्रकिया ,समाचार के विभिन्न स्रोत।
5. दृश्य सामग्री (कार्टून रेखाचित्र, ग्राफिक्स) की व्यवस्था और संवाददाता की अर्हता, श्रेणी एवं कार्यपद्धति।
6. पत्रकारिता से संबंधित लेखन – संपादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी समाचार, अनुवर्तन आदि की प्रविधि।
7. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता – रेडियो, टीवी, व्हिडीओ, केबल, मल्टीमीडिया और इंटरनेट पत्रकारिता।

8. प्रिंट पत्रकारिता और मुद्रणकला प्रूफ शोधन, ले आउट तथा पुष्ट सज्जा, मुक्तप्रेस की आवधारणा, लोकसंपर्क तथा विज्ञापन।
9. पत्रकारिता का प्रबंधन – प्रशासनिक व्यवस्था, बिक्री तथा वितरण व्यवस्था।
10. भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार, सूचनाधिकार एवं मानवाधिकार।

संदर्भ ग्रंथ

1. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता और रचनात्मक नवलेखन का अन्तःसंबंध – डॉ ऋचा शर्मा
2. जनमाध्यम प्रौद्योगिकी और विचारधारा –जगदीश्वर चतुर्वेदी
3. जनसंचार माध्यम : चुनौतियाँ और दायित्व– डॉ. त्रिभुवन राय श्याम प्रकाशन,जयपुर
4. जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र– जवरीमल्ल पारीख
5. हिंदी पत्रकारिता के इतिहास की भूमिका – जगदीश्वर चतुर्वेदी
6. मीडिया विमर्श – रामशरण जोशी
7. परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम– पूरनचंद्र जोशी
8. मीडिया और साहित्य –सुधीर पचौरी
9. साइबर स्पेस और मीडिया – सुधीर पचौरी
10. साहित्य का उत्तरकांड – सुधीर पचौरी
11. दूरदर्शन : संम्प्रेषण और संस्कृति– सुधीर पचौरी
12. दूरदर्शन : विकास से बाजार तक – सुधीर पचौरी
13. ब्रेक के बाद – सुधीर पचौरी
14. इक्कीसवी सदी और हिंदी पत्रकारिता – अमरेंद्र कुमार
15. एक जनभाषा की त्रासदी – गिरिराज किशोर
16. सूचना समाज – जगदीश्वर चतुर्वेदी

प्रश्नपत्र का स्वरूप तथा अंक विभाजन

समय 3 घंटे (कुल अंक 80)

सूचना : सभी प्रश्नों के लिए समान अंक होंगे ।

पाठ्यक्रम पर आधारित सात दीर्घोत्तरी प्रश्न होंगे तथा

आठवाँ प्रश्न टिप्पणियों (4 में से 2) का होगा । केवल पाँच प्रश्नों के

उत्तर अपेक्षित हैं ।